International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 9, Issue 07, July 2022
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

सरनाम सिंह शर्मा कृत 'कविता के आँसू' का कथ्य

डॉ. निमिता वालिया
सहायक आचार्य हिंदी विभाग,
डॉ.भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय,नोहर
जिला– हनुमानगढ़(राजस्थान)

शोध सार–

साहित्य तभी जन्म लेता है जब आत्माभिव्यक्ति की तीव्र कामना पनपी हो। अतएव यह निर्विवाद सत्य है कि साहित्यकार की रचनाओं में उसकी आत्मसत्ता प्रतिबिम्बित रहती है। कहने का तात्पर्य है कि साहित्यकार का व्यक्तित्व उसके कृतित्व में परिलक्षित होता है। इस संसार में सभी सजीव एवं निर्जीव प्राणियों में भिन्नता है। बहुत कम ही ऐसे हैं, जिन्हें ईश्वरीय वरदान के रूप में नैसर्गिक प्रतिभा प्राप्त होती है। अनेकों ज्ञान पिपासु इन साहित्यकारों के द्वारा अपनी तृष्णा को शान्त करते हैं। इनमें से कुछ ऐसे लेखक या कवि हुए हैं, जिन्होंने अपनी अलग पहचान इस साहित्य जगत में बनाई हुई है। ऐसी दिव्य विभूतियों में से एक सरनाम सिंह शर्मा जी हैं, जिन्होंने अपने उज्ज्वल प्रकाश से इस ज्ञान गंगा को प्रकाशमान किया। अनेकों साहित्यकारों और समालोचकों ने जो मिलकर हार तैयार किया है, उनमें इनका महत्व कम नहीं आंका जा सकता है। इनका व्यक्तित्व इनकी रचनाओं एवं इनके जीवन में सहज ही उद्घाटित होता है। इनकी हिन्दी साहित्य को अद्वितीय देन है। आपने भारतीय संस्कृति को उजागर करके उसकी किरणों को भास्कर के समान चहुँ ओर प्रसारित किया ।

मूल शब्द– अभीष्ट ,कथ्य,उज्ज्वल प्रकाश, सृष्टा एवं दृष्टा, उद्घाटित

प्रस्तावना–

डॉ. सरनाम सिंह शर्मा ने हमारे संस्कारों को आज के इस विज्ञान और प्रौद्योगिकी के युग में सजीव बनाने का सराहनीय कार्य किया । भावुक कवि डॉ. सरनाम सिंह शर्मा के आंसू 'कविता के आंसू' बनकर बहे। ऐसा कम ही रचनाओं में अब देखा जा सकता है कि कवि साहित्य के आंसू देख सके। अतः इनके विषय में जितना वर्णन किया जाए वह कम ही है। डॉ. सरनाम सिंह शर्मा जी के व्यक्तित्व और कृतित्त्व पर संक्षिप्त एवं सारगर्भित प्रकाश डालना अभीष्ट है–

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

'प्रिय गयी तुम्हारे संग जो

वह लौट न अब तक आयी,

क्या हुआ हँसी को जाने

कैसी तुमने भरमाई !!1

कथ्य शब्द संस्कृत की 'कथ्' धातु से बना है, जिस का अर्थ है 'कहना'। साहित्यकार युगीन परिवेश से साक्षात्कार करके अपने समाज का निरीक्षण करता है और उचित-अनुचित को ध्यान रखते हुए समाज के समुचित विकास की ओर संकेत करता है। साहित्यकार स्रश्टा एवं दृष्टा बनकर समाज की संभावनाओं को लक्ष्य करके अपने पाठकों से जो कुछ कहता है, वही उसके साहित्य का कथ्य कहलाता है। 'कथ्य' शब्द आलोचना के क्षेत्र में नवीन है, अंग्रेजी में इसका पर्यायवाची थीम है। कथ्य शब्द के स्थान पर संदेश, अभिप्रेत, अर्थ, मंतव्य, सम्प्रेक्ष्य, लक्ष्य आदि शब्दों का प्रयोग प्रचलन में रहा है। कथ्य शब्द अब स्वीकृत हो गया है, क्योंकि यह शब्द आलोचना के क्षेत्र में स्वीकार कर लिया गया है और यह उपर्युक्त सभी शब्दों के अर्थों को प्रकट करता है। थीम-संवाद संभाषण, प्रवचनादि वे आधारभूत कार्य अथवा वह सामान्य प्रकरण हैं, जिन्हें विचार-विशेष के द्वारा उद्वृत किया गया हो। थीम के लिए 'कथासूत्र' शब्द का प्रयोग होता है। इन कथासूत्रों के आधार पर कलाकृतियों के लिए नई प्रकार की समीक्षा का मार्ग प्रशस्त हो गया है। इसी आधार पर इसे विचार-लेख भी माना जाता है।

लुट गई हँसी अधरों की,

रँग भी कपोल का फीका;

एक लहर ताप की आयी,

जिसमें मेरा मन झींका।।2

आलोचकों ने 'कथ्य' शब्द का विवेचन-विश्लेषण करते हुए विवेकपूर्ण एवं तर्कसंगत परिभाषा दी हैं। साहित्य के क्षेत्र में 'कथ्य' और 'शिल्प' के पारस्परिक संबंध का प्रश्न अद्यतन विवादास्पद रहा है। साहित्य के समग्र तत्व कथ्य और शिल्प में सिमट कर रह जाते हैं। इनके द्वारा ही कृति के स्वरूप का निर्धारण होता है। समीक्षक इनके अनुशीलन द्वारा ही कृति का विश्लेषण करता है। कथ्य क्या होता है?- समीक्षा के क्षेत्र में यह विवाद का विषय बना हुआ है। उसको अलग-अलग किस प्रकार पहचाना जा सकता है ? कृति में कथ्य और शिल्प दोनों में से किस का महत्त्व अधिक है और इनका संबंध कैसा और क्या है ? वास्तव में देखा जाए तो कृति में कथ्य और शिल्प दोनों का अपना-अपना महत्त्व है, क्योंकि कथ्य और शिल्प के द्वारा ही कृति के स्वरूप का निर्माण होता है। इनके पारस्परिक स्वरूप के विवेचन-विश्लेषण के लिए कवि की मनोवृत्ति और परिस्थिति को जानना अनिवार्य है-

सपनों की हरियाली में

व्रण कभी-कभी भरते हैं;

जब प्राणों की वीणाएँ,

सपने कर में धरते हैं।। 3

डॉ.0 शिव शंकर पाण्डेय कथ्य के स्वरूप को मूल संवेदना से जोड़ते हुए कहते हैं, 'रचना की मूल संवेदना ही उसका कथ्य है। यह उन व्यक्तिगत या समष्टिगत अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जिन्हें आज का साहित्यकार जीता और भोगता है। इसका संबंध जीवन की उन यथार्थ स्थितियों से होता है, जिनके भीतर मामूली से मामूली आदमी सांस लेता है। ... आज का कवि समग्र जीवन को उसकी सारी अच्छाइयों, बुराइयों सहित अपनी रचना में प्रस्तुत करता है। युग की आवश्यकता के अनुरूप उसे ढालता है। 4'डालास्ट्रीम' ने कथासूत्र को विषय स्थिति और कथावस्तु से परिभाषित करते हुए उसे दिशा निर्देशक विचार, अभिप्राय, उपदेश और निश्चित उक्ति कहा है। 5 कथ्य का शाब्दिक अर्थ कहने योग्य या कथनीय या मूल भाव माना जाता है। इस प्रकार कथ्य और कथानक दोनों में अंतर है।.... कथानक एक काव्यांग है, परंतु उसे कथ्य कहना संकुचित अर्थ का द्योतक है, जिसके द्वारा कहानी बुनी जाती है, जबकि कथ्य कहानी की आंतरिक अनुभूति से संबंधित होता है। कथ्य का अर्थ है- किसी वस्तु के आंतरिक सूक्ष्म भाव। यह कवि का संवेदन है। साहित्यकार की संवेदना अथवा अनुभूति ही कथ्य है। उसकी अनुभूति अभिव्यक्ति के क्षणों में अमूर्त होती है। वह इसे मूर्त रूप देने के लिए बाह्य उपादानों, साधनों का आश्रय लेता है, जिसे शिल्प कहते हैं। एक उदाहरण देखिए-

'अनुनय केवट इतना है,

बच आवर्तों से खेना;

झंझा के उद्वेगों से,

तुम बाजी डट कर लेना।। 5

वास्तव में कविता हृदय की सरस शाब्दिक अभिव्यक्ति है। जब अनुभूतियों के गहन भार को संभालने में हृदय असमर्थ हो जाता है तब वे हृदय के रस को साथ ले उत्स की भांति फूट निकलती है। अनुभूतियों के फूट निकलने के दो ही प्रस्थित मार्ग हैः एक तो प्रतीक मार्ग और दूसरा कायिक मार्ग। जो व्यक्ति अभिव्यंजना सामर्थ्य से वंचित है, वे उन्हें कायिक साधनों से व्यक्त करते हैं, किंतु नैसर्गिक प्रतिभा से संपन्न लोगों को अभिव्यक्ति का साधन प्राप्त होता है; अतएव भाब्द-प्रतीक उनके अंतस् की घुटन को बाहर निकालने में अमोघ सहायता करते हैं। सरनाम सिंह शर्मा कृत 'कविता के आँसू' का कथ्य आमजन की अनुभूतियों का सुंदर दस्तावेज है, तो शिल्प की दृष्टि से भी यह काव्य-संग्रह उल्लेखनीय है-

'मन बहका-बहका-सा है

मन लहका-लहका-सा है;

मन दहका-दहका-सा है,

मन गहका-गहका-सा है।। 6

काव्य अनुभूति और अभिव्यक्ति का मिश्रित रूप होता है। जनमानस के संदर्भ में कवि हृदय में जो अनुभूतियाँ पैदा होती हैं अर्थात् परिवेश व घटित घटनाओं से कवि हृदय में जो प्रतिक्रियाएं होती हैं, कवि उन्हें साकार रूप देता है। कविता का सृजन भाव, विचार और कल्पना पर ही केंद्रित होता है। डॉ.0 सरनाम सिंह शर्मा ने 'कविता के आँसू' में कथ्य और शिल्प के समन्वित रूप को चित्रित किया है-

'नील गगन घन-माला से,

जैसे आँचल से मुख हो,

आवृत हिम से भौल शिखर,

या जैसे दुःख से सुख हो।।

बरस रहे हों स्नेह नयन,

नीरद का विकसित मन हो;

झुलसी हुई धरा का भी

सिहरन से सुरसित तन हो।। 8

अनूभूतियाँ भाब्द और दुःखद, दोनों प्रकार की होती है; किंतु अभिव्यक्ति से पूर्व दोनों प्रकार की अनुभूतियों का एक ही प्रभाव होता है और यह है अन्तस् में घुटन की उत्पत्ति। इस गहन भार को विसर्जित करके हृदय को जो तेज मिलता है, उसी को 'स्वान्तः सुख' कहा जा सकता है।

'कविता के आँसू' को आकार मिलने से पूर्व मुझे भी कुछ ऐसी घुटन का अनुभव हुआ था। कह नहीं सकती कि यह घुटन कैसी थी, किंतु पूर्व-रचना-कालीन दशा से मेरी मनोदशा अवश्य ही भिन्न थी। मन में जिन अनुभूतियों का संचय था, वह कविता के आँसू से से एकदम भिन्न था। 'कविता के आँसू' को जब आकार मिल रहा था तब मुझे यह साक्षात् प्रतीति हुई कि कवि का अन्तस् उस रसायनशाला के समान हैं जिसमें पड़कर व्यक्त जगत काँचन-शब्दावली में व्यक्त होता है। उसमें समस्त वस्तु-लोक व्यक्ति-पूरक होकर भी साधारणीकृत स्थिति में अनुभूत होता है।

इस निर्णय के संबंध में संभवतः कोई दो मत नहीं हो सकते कि लौकिक उल्लासों में कवि की संवेदना इतनी तीव्र नहीं होती जितनी वेदना मे। इसी से विरह, भोक, करूणा आदि भावों की व्यंजना मार्मिक होती है। 'कविता के आँसू' का निर्माण इन्हीं भावों की भूमिका पर हुआ है। यहाँ 'कविता' विरहिणी के रूप में प्रत्यक्ष हुई है। वह छिन्नाधार खग की भांति विरह के अथाह सागर में डुबकियाँ लगाती बड़ी कातर, आतुर और व्याकुल हो रही है-

'निज का उल्लास नहीं है,

किसका उल्लास दिखाते ?

यह सान्द्र गर्जना किसकी,

बरसना किसे सिखलाते ?9

कविता अपने प्रियतम से वियुक्त है। प्रिय संगम की सुखद स्मृतियों के घटाटोप में आह्लाद की जो मनोदशा बनती उसको वर्तमान वियोग में व्यवहृत करके कविता की दशा को दयनीय बना दिया है। कविता के सामने-उसके स्मृति-पथ में, आह्लाद की पृष्ठभूमि भी है और विरह-वेदना का वर्तमान धरातल भी। इन दोनों के बीच में कविता की कातरता की तरंगे बार-बार निराशा के तटों से टकराती हैं और आशा हृदय के सहस्रों टुकड़ों में आवेगों बुदबुदों में झलकती दिखाई देती है। अनेक

प्रलोभन, पारिस्थितिक आवेग तप्त भूमि पर बिंदु-वाशप की भांति उड़ते हैं और आशा की क्षीण किरणों के सहयोग से जो इन्द्रधनुशी वातावरण बनता है -वह आह्लाद का नहीं है, भोक-संवेदना का है।

'स्मृति का बस प्रेम निलय है

विस्मृति का प्रेम निकेतन;

स्मृति-विस्मृति के भी ऊपर

जीवन का प्रेम-निवेशन।10

इस प्रकार कल्पना विचार की सहधर्मिणी है जो कभी-कभी उससे संबंध-विच्छेद करके स्वतंत्र एवं स्वच्छंद भी हो जाती है। 'कविता के आँसू' में विरह अपनी उद्दाम स्थिति में है। ऐसा लगता है कि वह उत्सव मना रहा है; इसलिए कवि की समग्र हृतंत्री उसी का रागालाप करने में व्यस्त है। कविता के ब्याज से कवि का हृदय बरस और बह रहा है। प्रस्तुत आँसुओं में मर्मस्थल का तीव्र स्पर्श भी है और आवेगों की ऊशमा भी है। प्रकृति अपने संकलन और विकलन, दोनों रूपों में हृदय के मर्म-स्पर्श का विर्सजन नहीं करती।

कविता अपनी इस स्थिति में लज्जित भी है और पीड़ित भी है। कवि-वंचिता कविता-भामिनी एक उद्वेगमयी भटकन में पड़ी हुई है। कविता अपनी दुर्दशा पर इतनी दुःखी नहीं है, जितनी की वह अपनी भावी दशा की कल्पना से व्याकुल है। प्रिय के साथ कविता का मार्ग भी ध्वस्त-प्रायः हो गया है। अपनी स्थिति से अस्तुंशट कविता के मन में एक के बाद दूसरी कुंठा को जन्म मिलता जाता है।

कविता इतनी वियोग-वेदना पीड़ित नहीं है, जितनी कि वह अपने अपमान से त्रस्त है, आज कवि से तर्क है, हविस है और उत्क्रान्ति की तीव्र कामना भी है और यदि कुछ भी नहीं है तो यह क्या कम तोश की बात है कि वह कविता को नया रूप दे रहा है, एक नया मार्ग दिखा रहा है। आज कवि के पीछे अकवि और सुकवि भी लगे हुए हैं। कविता इस परिस्थिति का आकलन बड़ी व्यग्रता से कर रही है। आज भूतल और पाताल के रहस्यों के साथ नभस्थल भी मनुश्य की बुद्धि को अपने रहस्यों का उद्घाटन कर रहा है; किंतु यह उद्घाटन भौतिक तत्त्वों का आत्मसमर्पण हो सकता है, कविता नहीं है क्योंकि दोनों का क्षेत्र भिन्न है, दोनों के तत्त्वों में भेद है, दोनों के स्त्रोत भिन्न हैं और दोनों की प्रेरणाएं भिन्न हैं-

'सावन छाया है मुख पर

अविरल वर्शा, मन प्यासा;

बाहर न दीखता कुछ भी,

भीतर घन-विरह-कुहासा।।

रोता है अंतस रोता,

सिसकियाँ इसी का फल है!

पलकों के तट डूबे हैं,

लोचन धारा व्याकुल है।। 11

जिन कारणों से भाव उद्दीप्त होता है,उन्हें ही रस-सिद्धान्त की शब्दावली में 'विभाव' कहा गया है। इसके भी आलंबन और उद्दीपन ऐसे दो भेद किए गए ।

कविता वस्तु को वस्तु समझने में नहीं है, वह है वस्तु-बोध को अनुभूति में बदलकर अभिव्यक्त करने में। आज प्रबोध की क्षमता प्रखर है, किंतु आत्मबोध हीनता से पीड़ित है। आत्मबोध के बिना कवि का अंतर साकार नहीं होता; इसलिए कवि और उसके भेद की खाई बनी रहती है। यही तो भाव में अभाव की स्थिति है। यही कवि का भावदैन्य है। इस दृष्टि से 'कविता के आँसू' कवि-भाव के दैन्य का प्रदर्शन है-

'स्मृति प्रिय की, वह रूप-गहन

अतिभार शिथिलता देती;

आशा स्वपनिल क्षणिक तभी

मम दैन्य-भाव हर लेती।। 12

'कविता के आँसू' में प्रसाद-गुण का अतिरेक है, किंतु इसमें किसी 'प्रसाद' की भाव-छाया के भ्रम के लिए कोई अवकाश नहीं मिलना चाहिए। हाँ, 'प्रसाद' के 'आँसू' में आँसू छंद माना गया है। इस नाम को स्वीकार करके प्रस्तुत कृति का नाम भी 'कविता के आँसू' ही रखा गया है। इसके सिवा इससे किसी और गंध को सूंघना अनुचित होगा। 13 यह कृति मेरे, भावो का प्रबंध है। इसकी नायिका 'कविता' के इर्द-गिर्द ही सारे कोमल एवं कर्कश भाव प्रेरित हुए हैं। जो कविता की, 'प्रतीक-पात्रता' को भुलाकर किसी मानवीय पात्र की खोज करना चाहे, उन्हें असफलता नहीं मिलेगी।

जो दृष्टि इसमें नायक-नायिका को देख सकती है, किसी भावात्मक तारतम्य को भी खोज सकती है; किंतु दृष्टि-दोश के धुंधले परिवेश में इसे कोई भी नाम दिया जा सकता। सच बात यह है कि रचना में आँसुओं का प्रवाह है : आँसू बहे हैं, रूके नहीं; अतएव प्रवाह-परंपरा के बोध को मौक्तिक अवसर नहीं मिला-

'दिन याद कई आते हैं,

जब मेघ-घटाएँ आती;

वे मेरे केश-पाश को

क्यों देख-देख चकरातीं।। 14

कवि यदि अपनी रचना-प्रक्रिया और काव्य-लक्ष्य का विश्लेषण करने का इच्छुक है तो उसके इस कार्य में भी ये विधियाँ और निष्पत्तियाँ सहायक हो सकती हैं।

साहित्यकार समाज में रहते हुए समाज की अच्छाइयों-बुराइयों की ओर भी ध्यान देता है। वह अनुचित का खंडन करते हुए अच्छाइयों का पोषण करता है। इस प्रकार उसका लक्ष्य आर्दशात्मक बन जाता है, जब साहित्यकार अपने साहित्य में संत्रास, निरर्थकता, निराशा, कुरीतियां आदि की अभिव्यक्ति करता है तब उसका साहित्य यथार्थपरक हो जाता है। अतः कथ्य आदर्श और अनादर्श से जुड़े तथ्यों की संतुलित अभिव्यक्ति से जुड़ा होता है।

'निद्रा न निकट आती है,

वह डूबे पलक न छूती,

बह जाय न अश्रु-वाह में,

डरती है नपट निपूती।। 15

टॉलस्टॉय भी साहित्य में अनुभूत्यात्मक एकता के सिद्धान्त को महत्व देते थे। 16कथ्याभाव में कला अथवा साहित्य का अस्तित्व निर्मूल माना जाता है। कोरा कलावाद या रूपवाद भले ही दिखाई पड़ जाए। सामाजिक जीवन से तिरस्कृत होकर साहित्यकार शिल्प का जाल बुनता है। कथ्य के अभाव में साहित्य या कला को जीवित रहना उसी प्रकार असंभव है जिस प्रकार सूक्ष्म शरीर सहज और सरल परिवेश से पोशित होता है। इस प्रकार साहित्य में कथ्य को महत्व देते हुए इसे साहित्य की आत्मा माना जा सकता है। परंतु विचार व्यक्तिगत भी हो सकते हैं। जिस प्रकार आत्मा पूरे शरीर में समाहित रहती है, ठीक उसी प्रकार कथ्य संपूर्ण कृति में समाहित रहता है। एक उदाहरण देखिए-

'कहते थे - 'प्रेम अतल है'?

कहते थे - 'प्रगति चपल है';

धीरज अब धरा छोड़ कर

जाता रहा ! कहीं विकल है !! 17

सुख-दुःखात्मक अनुभूति से वेदना भाव उत्पन्न होता है। अतः भावात्मक दृष्टिकोण अथवा बोध की प्रधानता के कारण ही कवि तत्कालीन समाज एवं परिवेश से विभिन्न आकार के बोध प्राप्त करता है। कवि का बोध और संवेदनशीलता परस्पर अविभाज्य रूप में गुम्फित रहते हैं। मानव-समाज में युगे-युगे, भिन्न-भिन्न प्रवृतियों की प्रधानता रहती आई है। अतः संवेदना के स्तर भी प्रत्येक युग में भिन्न-भिन्न रहते हैं। यही कारण है कि परिस्थितिवश किसी युग के काव्य में भाव-पक्ष की प्रबलता दृष्टिगत होती है, तो किसी अन्य युग के काव्य में कला-पक्ष की प्रधनता रहती है। किसी युग के काव्य में अंतर्मुखी हो गया है तो किसी युग का कवि बहिर्मुखी है। 18

यद्यपि अनुभूति कवि के अंतःकरण की ही एक प्रक्रिया है, तथापि उसका संबंध बाह्यकरण एवं सामाजिक परिवेश से भी है। साहित्यसृजन करने वाला चाहे किसी भी पात्र की आंतरिक अनुभूतियों की अभिव्यंजना करे, उनमें भी उसके नीरस व्यक्तित्व की झलक विद्यमान रहती है। इतना ही नहीं वह जिन भावनाओं को अपने साहित्य में सर्वोच्च देता है, वे वस्तुतः उसके व्यक्तित्व एवं जीवनोनुभूति ही है। जैसे-

'स्मृतियों की रेखाओं से

जब चित्र आँकती तेरा,

बरबस लोचन भर जाते,

सब विफल यत्न तब मेरा।।

ये आँसू क्रूर बड़े हैं,

निर्लज्ज बड़े हैं भारी,

पलकों से ढलने पर तो

ये बन आते अवतारी।। 19

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि काव्य का कथ्य बहुआयामी होता है। कविता की संवेदना बहुस्तरीय होती है। कहीं कवि ने भौतिकवादी जीवन शैली के कारण निज जीवन में व्याप्त अवसाद, तनाव व आत्म-संघर्ष को उकेरा है, तो साथ ही राजनैतिक, सामाजिक अवधारणा के विकृत रूप को उजागर किया है। इस नवीन जीवन शैली की भागमभाग, आपाधापी से छटपटाती मनोस्थिति के बिम्ब है, तो कहीं व्यवस्था से अंतर्जन्म, कुरूचियां और घिनौनी स्थितियां हैं, कहीं बिखरित होते मूल्यों का रोना-धोना है, तो कहीं सामाजिक परिवेश की विसंगतियों का लेखा जोखा है। कथ्य में यदि एक ओर आक्रोश, विद्रोह और समूचे ढाँचे को परित्याग करने का उद्घोष है, तो दूसरी ओर मानवीय सहृदयता का अंकन भी अनिवार्यतः रहा है। समसामयिक कविता की जहां तक बात है- यह किसी भी दृष्टि से उपर्युक्त संवेदनाओं से रिक्त नहीं है, अपितु व्यक्ति से लेकर परिवार और समाज से होती हुई, राजनीतिक, धर्मिक स्तर तक की संवेदनाओं को इस क्षेत्र की कविता में उन्मुक्त एवं विराट अंकन मिलता है। कथ्य के मूलाधार राजनीति, धार्मिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक इत्यादि पक्षों से जुड़ी संवेदनाओं के संदर्भो को सैद्धांतिक मान्यताओं के आइने में देखने का प्रयास किया है, ताकि आगे इन संवेदनाओं के व्यवहारिक पक्ष को उचित एवं सटीक ढंग से प्रस्तुत किया जा सके।

संदर्भ सूची

1 डॉ0 सरनाम सिंह शर्मा 'कविता के आँसू' पृ0 45
2 डॉ0 सरनाम सिंह शर्मा 'कविता के आँसू' पृ0 55
3 डॉ0 सरनाम सिंह शर्मा 'कविता के आँसू' पृ0 55
4 संपादक डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश पृ0 205–206
5 संपादक डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश पृ0 46
6 डॉ0 सरनाम सिंह शर्मा 'कविता के आँसू' पृ0 24
7 डॉ0 सरनाम सिंह शर्मा 'कविता के आँसू' पृ0 51
8 डॉ0 सरनाम सिंह भार्मा 'कविता के आंसू पृ0 54
9 डॉ0 सरनाम सिंह शर्मा 'कविता के आँसू' पृ0 58
10 डॉ0 सरनाम सिंह शर्मा 'कविता के आँसू' पृ0 28
11 डॉ0 सरनाम सिंह शर्मा 'कविता के आँसू' पृ0 47
12 डॉ0 सरनाम सिंह शर्मा 'कविता के आँसू' पृ0 11
13 डॉ0 सरनाम सिंह भार्मा भूमिका से
14 डॉ0 सरनाम सिंह शर्मा 'कविता के आँसू' पृ0 36
15 डॉ0 सरनाम सिंह शर्मा 'कविता के आँसू' पृ0 35
16 वही, पृ. 35
17 डॉ0 सरनाम सिंह शर्मा 'कविता के आँसू' पृ0 45
18 संपादक डॉ0 भोला नाथ तिवारी, चित्रमय बालकोश पृ0... 358
19 डॉ0 सरनाम सिंह शर्मा 'कविता के आँसू' पृ0 30